मत्स्य विभाग हरिद्वार।

कार्यालयाध्यक्ष का नाम/पदनाम– श्री एच.के.पुरोहित, सहायक निदेशक मत्स्य

टेलीफोन/मोबाइल नं0– 01334–239008 – 9412352657
जनपद मत्स्य प्रभारी– श्री यू0पी0 सिंह–9411322250
कार्यालय कक्ष संख्या– 57, द्वितीय तल, विकास भवन

विभाग द्वारा संचालित योजनायें

1–**मत्स्य पालक विकास अभिकरण (तालाब निर्माण/सुधार) योजना**–

मत्स्य पालन हेतु आवंटित ग्राम समाज के तालाब के पटटा धारक को तालाब सुधार तथा निजि भूमि में तालाब निर्माण लागत एवं प्रथम वर्षीय लागत हेतु बैंक से ऋण की व्यवस्था है। कुल लागत पर अनुमन्य 20 प्रतिशत सामान्य जाति के लिये तथा 25 प्रतिशत अनुसूचित जाति/जन जाति के लिये शासकीय अनुदान देय है। अनुदान की यह सुविधा बैंक ऋण न लेने वाले लाभार्थियों को भी देय है। एक है0 तालाब निर्माण एंव निवेश पर सामान्य जाति हेतु अधिकतम रू0 70,000/–तथा अनु0 जाति हेतु अधिकतम रू0 87,500/– अनुदान के रूप में देय है।

2–**विशेष संघटक योजना**–इस योजना के अन्तर्गत अनुसूचित जाति के लाभार्थियों को 0.2 है0 के तालाब निर्माण हेतु रू0 49000/–का अनुदान। एक लाभार्थी को अधिकतम 3 युनिट के निर्माण की सुविधा।

3–**राष्ट्रीय मछुआ कल्याण योजना** –मत्स्य व्यवसाय से जुड़े मछुवा समुदाय के पक्के आवासहीन पात्र व्यक्तियों को आवास निर्माण हेतु रू0 75000/–अनुदान की सुविधा। एक गॉव में कम से कम 10 आवासों के निर्माण की सुविधा। कम से कम 10 आवासों के बीच में पेयजल व्यवस्था हेतु हैण्डपम्प की स्थपना हेतु रू0 40,000/–अनुदान की व्यवस्था।

4–**मत्स्य बीज आपूर्ती**–मत्स्य पालकों को उनकी मॉग के अनुसार निकटतम रोड हेड तक मत्स्य बीज आपूर्ती की व्यवस्था।

5– **दुर्घटना बीमा योजना**–इसके अन्तर्गत मछुवा मछुवा समुदाय के व्यक्तियों की मृत्यु/पूर्ण स्थाई अपंगता की स्थिति में रू0 200000/–तथा आंशिक स्थाई अपंगता के लिए रू0 100000/– तथा किसी दुर्घटना होने पर चिकित्सा प्रतिपूर्ती हेतु रू0 10,000/–की बीमा धनराशि से आच्छादित किया जायेगा।

6–**जलाशयों का विकास योजना**–जनपद में जलीय पर्यावरण का संतुलन बनाये रखने के उद्देश्य से संचालित है, जिसमें जनपद के चिन्हित स्थलों पर मत्स्य बीज संचय के साथ–साथ मात्स्यिकी संरक्षण एंव जनचेतना बढ़ाने हेतु गोष्ठियों का आयोजन किया जाता है।

सफलता की कहानी–मत्स्य जीवी सहकारी समिति, खेड़ाजट्ट नारसन दिसम्बर 2004 में समिति का गठन कर ग्राम समाज के तालाबों का पट्टा करवाकर मत्स्य पालन का कार्य शुरू किया तथा 1.5 टन /है0 का मत्स्य उत्पादन प्राप्त किया। वर्तमान में मत्स्य विभाग के तकनीकी सहयोग एंव मार्गदर्शन तथा वित्तीय सहायता प्राप्त कर वैज्ञानिक मत्स्य पालन अपनाते हुए समिति 5.0 टन प्रति है0 प्रति वर्ष मत्स्य उत्पादन प्राप्त कर रही है।